मैत्री, प्रमोद, करुणा, माध्यस्थ भावना

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मैत्री, प्रमोद, करुणा और माध्यस्थ भावना में विश्व का कल्याण निहित है। प्राणियों के सुखी दर्शन का जीवन इसमें समाहित है। सर्वजन सुखाय एवं सर्वजन हिताय का मूल इसमें छिपा है। मित्रता एक बहुत बड़ा गुण है। जो जीवन में हर समय काम आता है। सच्चा मित्र वही होता है जो दुःख में साथ दें। रामचरित मानस में भगवान रामचन्द्रजी के चौदह साल के बनवास में केवट, हनुमानजी, सुग्रीव, अंगद, जटायु और अनेक जंगली जातियां मित्र के रूप में उनका साथ दी थी। इन्हीं के सहारे लंकापति रावण को पराजित करके भगवान राम ने माता सीता को अयोध्या वापस लाये थे। भगवान कृष्ण और सुदामा की मित्रता सर्वविदित् है। मैत्री सभी प्राणियों के साथ करनी चाहिए। कब कौन कहां सहायता दे जाये इसे कोई नहीं जानता। मित्रता स्वार्थ के आधार पर नहीं बल्कि निःस्वार्थ भाव से होनी चाहिए। मित्रता में छोटा–बड़ा, ऊँच–नीच का भेदभाव नहीं रखना चाहिए।

प्रमोद भावना का अर्थ है कि किसी के उत्कर्ष को देखकर मन में प्रसन्नता का भाव रखना। इससे सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है। दूसरों के अच्छे गुणों को देखकर उन्हें अपने भीतर धारण करके की इच्छा जाग्रत होती है। प्रमोद भावना नकारात्मक वृत्ति को नष्ट करती है। करुणा की भावना मानव के हृदय में विराजमान रहती है। यह भावना दूसरों को द्रवित कर देती है। भगवान राम ने जटायु को मूर्छित देखकर करुण विलाप किया था। भगवान महावीर, भगवान बुद्ध ने करुणा की भावना का प्रदर्शन कर जीवों को मुक्ति का मार्ग दिखलाया। माध्यस्थ भावना तटस्थ भाव है। यह अनासक्ति का भाव है। इस भाव से प्राणी सुख–दुःख के द्वन्दो से परे रहता है।

मैत्री, प्रमोद, करुणा और मध्यस्थता जीवन निर्माण के सूत्र हैं। इससे चरित्र निर्माण होता है। चरित्र मानव का सर्वश्रेष्ठ गुण है। चरित्रवान व्यक्ति सादा जीवन और उच्च विचार का जीवन

जीता है। चरित्र की सर्वत्र पूजा होती है। अन्य सभी वस्तुएं आती जाती रहती है। महापुरुषों की पूजा चरित्र के कारण होती है। समाज में महापुरुष एक नया दर्शन देता है। इसलिए वह आदरणीय होता है। मैत्री सभी प्राणियों के साथ होनी चाहिए। भगवान महावीर ने कहा है कि सभी प्राणियों के साथ मैत्री करनी चाहिए। चौरासी लाख जीव योनियों में सभी प्राणी आत्मा के स्तर पर समान है। सबमें एक ही आत्मा है। भेद के कारण शारीरिक भिन्नता दिखाई देती है। राग–द्वेष परस्पर नहीं करना चाहिए। सभी प्राणियों के साथ क्षमाभाव धारण करना चाहिए। किसी को धोखा, तिरष्कार और कष्ट नहीं देना चाहिए। मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र उसकी अपनी आत्मा है। अतः आत्मा को ही जानना एवं पहचानना चाहिए।

जो दूसरों की आंखों में आंसू नहीं आने देता ईश्वर उसकी आंखों में कभी भी आंसू नहीं आने देता। मध्यस्थता का अर्थ माध्यस्थ भावना है। यह भावना तटस्थ भावना है। भूखे व्यक्ति को भोजन देना, गरीब व्यक्ति की यथावश्यक सहायता करना, शिक्षा की व्यवस्था करना और दीन दुखियों की आर्थिक सहायता करना दया भाव है। मानव का यह सामाजिक कर्तव्य है कि वह दीन हीनों पर दया भाव रखें। समाज में सम्पन्न और विपन्न दोनों प्रकार के लोग रहते हैं। समाज के लोगों का यह नैतिक उत्तरदायित्व है कि वे विपन्न लोगों के उपर दया भाव से नहीं बल्कि अपना कर्तव्य समझकर उनकी सहायता करें। यह सामाजिक भ्रातृत्व भाव है। पूरे समाज में वसुधैव कुटुम्बकम का भाव रखना चाहिए। जिस व्यक्ति में करूणा की भावना होती है वह व्यक्ति श्रेष्ठ होता है।

दया और करुणा का भाव कई प्रकार से प्रकट होता है। जीवों के प्रति संयम का भाव रखना दया का भाव है। जीव दया का अर्थ है– प्राणियों पर दया दृष्टि रखना। किसी भी प्राणी की हत्या न करना। ब्रह्माण्ड चौरासी लाख योनियों का केन्द्र है। प्राणी यहां जन्म लेता है और कर्मों का भुगतान करने के लिए जीवन–यापन करता है। चौरासी लाख जीव योनियों में केवल मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो सबसे अधिक विकसित है। अन्य प्राणी न चिंतन कर सकते हैं न मनन। भारतीय संस्कृति को चार भागों में बांटा गया है– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। मनुष्य धर्म कर्म के द्वारा मोक्ष प्राप्त करता है। यदि प्राणी बुरा कर्म करे तो नर्क में जा सकता है। प्रकृति सबका भरण पोषण करती है। जिस माता–पिता ने अपने को जन्म दिया है उस बच्चे

का भरण पोषण करना उसका कार्य है। मनुष्य यदि अपनी बुद्धि का दुरुपयोग करता है, जीव हत्या करता है तो उसका कर्म निन्दनीय होता है।

सभी व्यक्ति सुखी रहना चाहते हैं, दुःख कोई नहीं चाहता। किन्तु कर्मों के कारण प्राणियों को सुख–दुःख प्राप्त होता रहता है। यदि पूर्वजन्म के कर्म बुरे हैं तो दुःख प्राप्त होता है। इसलिए ऐसा कोई कर्म नहीं करना चाहिए। जिससे दुःख की प्राप्ति हो। कर्म बीज की तरह है। जैसे जिस बीज को बोया जायेगा, वह फल वैसा ही देगा। यदि बबूल का बीज बोया गया है तो निश्चित ही कांटे निकलेंगे और यदि आम का बीज बोया गया है तो आम का फल प्राप्त होगा। इसलिए मनुष्य को अच्छा कर्म ही करना चाहिए। मनुष्य को जीव दया करनी चाहिए। मैत्री, करुणा, सद्भावना, सुचिता और प्रमोद भावना रखनी चाहिए। जगत् के किसी भी प्राणी को दुःख नहीं देना चाहिए।